

क. वाचा:

❖ वाचा का लहू (निर्गमन 24:1-6, 8)

- परमेश्वर ने इस्राएल को एक जाति के रूप में मान्यता दी (12 स्तंभ); उसने विशेष रूप से युवाओं को महत्व दिया; और उसने स्वयं को प्रत्येक व्यक्ति के प्रति समर्पित किया (अपना लहू उन पर छिड़का)।
- परमेश्वर हमसे व्यक्तिगत रूप से और विश्वासियों के समुदाय के रूप में सम्बन्ध चाहता है।

❖ वाचा का निभाना (निर्गमन 24:7)

- पूरी ईमानदारी से, लोगों ने वाचा निभाने के लिए खुद को प्रतिबद्ध किया। यह प्रतिबद्धता अल्पकालिक थी (निर्गमन 32:8)।
- अगली पीढ़ी ने भी वाचा निभाने का संकल्प लिया (यहोशू 24:18)। लेकिन यहोशू ने उन्हें स्पष्ट रूप से चेतावनी दी: "तुम से यहोवा की सेवा नहीं हो सकती" (यहोशू 24:19)।
- हमारे अच्छे इरादों के बावजूद, हमें परमेश्वर की आज्ञा मानने से क्या रोकता है?
- स्वभाव से हम अवज्ञाकारी हैं (रोमियों 7:18), और हम अपनी प्रवृत्ति को बदलने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते हैं (रोमियों 7:24)।
- लेकिन अगर हम परमेश्वर को अनुमति दें, तो वह हमारा स्वभाव बदल सकता है (यहेजकेल 36:26-27)। वह शुद्ध करता है, छीन लेता है, देता है, और स्थापित करता है ताकि हम उसकी आज्ञा मान सकें। केवल वही हमें मज़बूत बनाता है (2 कुरिन्थियों 12:10)।

❖ वाचा का भोज (निर्गमन 24:9-18)

- जैसा कि हम याकूब और लाबान के उदाहरण में देखते हैं, प्राचीन पूर्व में वाचा की पुष्टि में दोनों पक्षों द्वारा साझा भोजन शामिल होता था (उत्पत्ति 31:44-54)।
- सीनै में, परमेश्वर ने 74 लोगों को "वाचा भोज" दिया: मूसा, हारून, नादाब, अबीहू, और 70 बुजुर्ग, जो सभी लोगों का प्रतिनिधित्व करते थे (निर्गमन 24:9-11)।
- जब यीशु ने नई वाचा की स्थापना की, तो उसने ऐसा 12 प्रेरितों के साथ भोजन साझा करके किया। (मत्ती 26:26-28)।
- हर बार जब हम प्रभु भोज में भाग लेते हैं, तो हम परमेश्वर के साथ अपनी वाचा को नवीनीकृत करते हैं। रोटी और दाखरस ग्रहण करके, हम यीशु में प्राप्त क्षमा और उद्धार का उत्सव मनाते हैं (1 कुरिन्थियों 11:26)।
- उद्धार को अंततः अस्वीकार करने के बावजूद, न तो नादाब, न अबीहू, न ही यहूदा को इस "वाचा भोज" से बाहर रखा गया।

ख. नमूना:

❖ नमूने का उद्देश्य (निर्गमन 25:1-9)

- इस बात की गारंटी के रूप में कि वह वाचा के अपने हिस्से को पूरा करेगा, परमेश्वर ने लोगों के बीच जाकर रहने का निर्णय लिया।
- लेकिन परमेश्वर की भौतिक उपस्थिति का अर्थ उन सभी के लिए तत्काल मृत्यु होती (निर्गमन 33:20)। इसलिए, उसने उन्हें एक पवित्र स्थान बनाने का आदेश दिया जहाँ वह अपनी उपस्थिति प्रकट कर सके। यह उपस्थिति प्रतीकों में प्रकट हुई, क्योंकि परमेश्वर किसी भी सांसारिक मंदिर में भौतिक रूप से निवास नहीं करता (प्रेरितों 17:24)।
- मूसा को नमूना दिखाया गया और उसे बनाने के लिए खास निर्देश दिए गए। लोगों से ज़रूरी सामग्री देने को कहा गया (निर्गमन 25:2-7)।
- दोनों पवित्रस्थान और सुलैमान द्वारा निर्मित मंदिर स्वर्ग में निर्मित पवित्रस्थान का नमूना थे (इब्रानियों 8:1-2; 1 राजा 8:27, 30)।
- जब कोई इस्राएली पवित्रस्थान में प्रवेश करता था, तो वह प्रतीकात्मक रूप से परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करता था... जब तक कि यीशु की मृत्यु के बाद पर्दा फट नहीं गया।

❖ नमूने की तैयारी (निर्गमन 31:1-18)

- हालाँकि परमेश्वर ने मूसा को निर्माण के बारे में बहुत विस्तृत निर्देश दिए थे, लेकिन उसने उसे हर विवरण नहीं बताया। पीतल का हौज़, करूब, याजकों की पगड़ियाँ वगैरह कैसी दिखनी चाहिए? इससे पवित्र आत्मा को निर्माणकर्ताओं के उपहारों के साथ काम करने का मौका मिला।
- पवित्रस्थान के निर्माण के निर्देशों के बीच, सब्त का विशेष उल्लेख है। (निर्गमन 31:12-17) सब्त का इन सब से क्या संबंध है?
- पवित्रता ही कुंजी है। पवित्र परमेश्वर के निकट पहुँचने के लिए, हमें उसके समान पवित्र होना चाहिए। सब्त उस पवित्रता का प्रतीक है (निर्गमन 31:13; यहेजकेल 20:12, 20)।